आयो नागर नटु, बेखु करे बाजारि में,
ब्रांभणु चवे ब्रियाईअ रे, कढी वेठो हटु,
पाण वापारी वणिजु थियो, पाण ताराजी वटु,
रइयत राजा पाण थियो, कांइरु सुरु सुभटु,
पाण कुंभरु आवी बणियो, चाकु मिटी घटु मटु,
पाण फूल फलु पथरु थियो, पाण डार ब्रिजु बटु,
अंदरि ब्राहरि दह दिसा, खेले गुप्तु परघटु,
परिची खोले पटु, पाण लखाए पाण खे.

परमेश्वर के विविध रूपों का वर्णन करने के लिए उन्हें एक नट/अभिनेता की उपमा देते हुए सामी कहते हैं, नाट्य-कला-निपुण नट (परमेश्वर) वेश/भेस धारण कर बाजार (संसार) में आया है। वह बिना किसी भेद-भाव के हाट/दुकान खोलकर बैठा है। अनेक भूमिकाएँ निभाने वाला परमेश्वर रूपी नट कभी व्यापारी बनता है तो कभी व्यापार बनता है। वह स्वयं ही तराजू और बाट (बट्टा/तौल) बन जाता है। परमेश्वर स्वयं ही कभी प्रजा बनता है तो कभी राजा। कभी वह योद्धा एवं वीर बनता है तो कभी कायर, भीरु या डरपोक! वह कभी कुम्हार बनता तो कभी भट्ठा। कभी कुम्हार का चाक बनता है तो कभी मिट्टी, घट और माट। परमात्मा कभी फूल, फल और पत्ता/पर्ण बनता है तो कभी डाली, बीज और वृक्ष। विविध रूप धारण करने वाला परमेश्वर भीतर और बाहर तथा दसों दिशाओं में प्रकट एवं गुप्त रूप में खेल खेल रहा है। वह अपना पटल/आवरण खोलकर स्वयं को दिखला रहा है।

परब्रह्म परमेश्वर एक है परंतु अपने एक रूप से वह अनेक रूप, अनंत रूप धारण करने वाला है- 'एकोऽहम बहुस्याम' गीता में श्रीकृष्ण ने अर्जुन' को अपने विश्व रूप का, विभूतियों का बोध कराया है। परमेश्वर की अनंतता, असीमता, सर्वव्यापकता, सर्वज्ञता श्रीकृष्ण के ही मुख से सुनने पर अर्जुन का मोह दूर हो जाता है। वस्तुतः परब्रह्म/परमेश्वर सर्वकर्ता एवं विश्व का संचालक है। वही विश्व के चेतन एवं अचेतन पदार्थों में विद्यमान है। सभी जीवों के हृदय में परमात्मा ही आत्मा के रूप में स्थित है। सर्वगुण संपन्न परमात्मा ही सृष्टि के कण-कण में विद्यमान है। संसार में एकमात्र परमेश्वर की ही सत्ता है और वही सब कुछ है।

ऐसे परमेश्वर के सगुण रूप का वर्णन महाकवि सामी अपने श्लोक में करते हैं। उसे एक नट की उपमा दे कर, उसकी लीला का वर्णन करते हुए रूपों का, भूमिकाओं का चित्रण किया है। 'एकपात्रीय' नाटक करने वाला नटपरमात्मा विविध भूमिकाएँ निभा रहा है!

■